

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 17, विशेष रहस्योद्घाटन, पवित्र शास्त्र, प्रेरणा के सात दृष्टिकोणों का मूल्यांकन, प्रेरणा का धर्मशास्त्र, प्रेरणा के परिणाम

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 17 है, विशेष प्रकाशितवाक्य, पवित्र शास्त्र, प्रेरणा के सात दृष्टिकोणों का मूल्यांकन, प्रेरणा का धर्मशास्त्र, प्रेरणा के परिणाम।

हम विशेष प्रकाशितवाक्य पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, विशेष रूप से पवित्र शास्त्र में, जो हमारे पाठ्यक्रम का मुकुट है।

हमने प्रेरणा के सात दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं, और अब प्रेरणा के बारे में सुसमाचारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करने से पहले उनका मूल्यांकन करने का समय आ गया है। प्रेरणा के दृष्टिकोणों का मूल्यांकन। सबसे पहले, अंतर्ज्ञान सिद्धांत।

अंतर्ज्ञान सिद्धांत के विपरीत, प्रेरणा आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रयोग करने वाले धार्मिक प्रतिभाओं का मामला नहीं है। प्रेरणा ईश्वर का एक विशेष कार्य है, जो शास्त्र लेखकों के माध्यम से अपना वचन बोलता है। ईश्वर इस सिद्धांत की तुलना में कहीं अधिक तात्कालिक अर्थ में शास्त्र का लेखक है।

यह केवल धार्मिक प्रतिभा के माध्यम से तत्काल अर्थ में ईश्वर की गतिविधि की अनुमति देता है, जिसके बारे में वे कह सकते हैं, ठीक है, यह ईश्वर का उपहार है, लेकिन जब लेखक लिखते हैं तो पवित्र आत्मा का कोई विशेष पर्यवेक्षण नहीं होता है। प्रेरणा के बारे में यह सोचना सही है कि इसमें लिखने से पहले लेखकों की ईश्वर की दैवीय तैयारी शामिल है। यह बी.बी. वारफील्ड और पुराने प्रिंसटनियन का एक महान योगदान है।

प्रेरणा के बारे में यह सोचना सही है कि इसमें ईश्वर द्वारा लेखकों को लिखने से पहले तैयार करना शामिल है। इस संबंध में, मूसा का फिरौन की बेटी के घर में पालन-पोषण होना और मूसा का जंगल में भटकना उसे कुछ ऐसे मामलों के बारे में लिखने के योग्य बनाता है जो उसने पेंटाटेच में लिखे थे, खासकर निर्गमन और संख्या में। यह कहना गलत है कि ईश्वर केवल उन लेखकों को महान धार्मिक जागरूकता प्रदान करने के अर्थ में शास्त्र का स्रोत है।

परमेश्वर अपने वचन का स्रोत है, क्योंकि वह इसका अंतिम लेखक है। आत्मा ने लेखकों को निर्देशित किया ताकि वे परमेश्वर के लिए बोलें, 2 पतरस 1:21। प्रकाश सिद्धांत।

प्रकाश सिद्धांत के विपरीत, शास्त्र की प्रेरणा अन्य प्रकार की प्रेरणाओं से भिन्न है, न केवल डिग्री में, बल्कि प्रकार में भी। प्रत्येक शास्त्र अंश परमेश्वर द्वारा अपना वचन बोलने का परिणाम है, 2 तीमुथियुस 3:16। सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं, परमेश्वर द्वारा बोले गए हैं।

गतिशील सिद्धांत यह देखने में सही है कि ईश्वर और मनुष्य दोनों ही धर्मग्रंथों के निर्माण में सक्रिय रूप से एक साथ काम करते हैं। यह एक प्रगति है। यह एक बेहतर दृष्टिकोण है क्योंकि ईश्वर और मानव लेखकों ने धर्मग्रंथों के निर्माण में काम किया था।

परमेश्वर शास्त्र के लेखकों के साथ काम करता है और अपने वचन को व्यक्त करने के लिए उनकी शैली, शब्दावली और व्यक्तित्व का उपयोग करता है। जब मनुष्य परमेश्वर का वचन लिखते हैं तो वे बोलते हैं। हालाँकि, यह सिद्धांत गतिशील सिद्धांत को गलत साबित करता है जब यह परमेश्वर के प्रभाव को शास्त्र के विचारों तक सीमित कर देता है।

परमेश्वर भी साँस छोड़ता है और शास्त्र के शब्दों को बोलता है, 2 तीमुथियुस 3:16। प्रेरणा का मौखिक सिद्धांत जो पुष्टि करता है, उसमें सही है, लेकिन यह अधूरा है। यह पुष्टि करना पर्याप्त नहीं है कि परमेश्वर शास्त्र के शब्दों को प्रेरित करता है और श्रुतलेख को अस्वीकार करता है, हालाँकि ये दोनों बातें अच्छी हैं।

अंतर्ज्ञान सिद्धांत और रोशनी सिद्धांत के विपरीत, भगवान शब्दों को प्रेरित करते हैं, और वे सही हैं, जैसा कि मौखिक सिद्धांत का समर्थन करता है। वह ईश्वरीय निर्देश के आधार पर शब्दों को प्रेरित नहीं करता है, कम से कम शास्त्रों में तो ऐसा ही है। असामान्य रूप से, कुछ हिस्सों में, कुछ चीजें निर्देशित की जाती हैं, लेकिन यह उतना आम तरीका नहीं है।

यह पुष्टि करना पर्याप्त नहीं है कि ईश्वर शास्त्र के शब्दों को प्रेरित करता है और श्रुतलेख को अस्वीकार करता है। बाइबल हमें ऐसी जानकारी देती है जो हमें शास्त्र के निर्माण के बारे में और अधिक कहने के लिए प्रेरित करती है। गतिशील सिद्धांत में एक साथ काम करने वाले दिव्य मानव भी प्रेरणा के बाइबिल सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इसलिए मौखिक सिद्धांत अंतर्ज्ञान और रोशनी सिद्धांतों जैसे सिद्धांतों पर एक प्रमुख प्रगति है, लेकिन यह, यह, यह अधूरा है। श्रुतलेख सिद्धांत सही ढंग से पुष्टि करता है कि शास्त्र के शब्द ईश्वर के शब्द हैं। और विडंबना यह है कि प्रोटेस्टेंट और रूढ़िवादी लोगों का यही मतलब था जब उन्होंने श्रुतलेख शब्द का इस्तेमाल किया।

वे परमेश्वर की प्रेरणा के तरीके या उसने बाइबल को कैसे प्रेरित किया, इस बारे में बात नहीं कर रहे थे। श्रुतलेख सिद्धांत सही ढंग से पुष्टि करता है कि शास्त्र के शब्द परमेश्वर के शब्द हैं, लेकिन यह गलत तरीके से श्रुतलेख को प्रेरणा के तरीके के रूप में प्रस्तुत करता है। बाइबल के साधन, विधि और भाग निर्देशित हैं।

उदाहरण के लिए, 10 आज्ञाएँ। फिर भी, लेखकों की अलग-अलग शैलियाँ और शब्दावली, ल्यूक एक, एक, चार का कथन जिसका उन्होंने अध्ययन किया, और अन्य धर्मग्रंथों के डेटा पूरे के लिए श्रुतलेख की अनुमति नहीं देंगे। मुझे ल्यूक एक, एक, चार पढ़ना चाहिए, इसे पढ़े बिना कई बार

इसका उल्लेख करना अच्छा नहीं है क्योंकि ल्यूक के रूप में कई लोगों ने हमारे बीच जो कुछ भी पूरा किया है, उसका वर्णन संकलित करने का बीड़ा उठाया है।

ठीक वैसे ही जैसे कि जो लोग शुरू से ही प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक थे, उन्होंने हमें ये बातें बताई हैं। हे श्रेष्ठ थियोफिलस, पिछले कुछ समय से सभी बातों पर बारीकी से नज़र रखने के बाद, मुझे भी यह अच्छा लगा कि मैं तुम्हारे लिए एक व्यवस्थित विवरण लिखूं, ताकि तुम उन बातों के बारे में निश्चित हो सको जो तुम्हें सिखाई गई हैं। लूका ने लूका का अध्ययन किया और सोचा कि वह शास्त्र लिखने की तैयारी के रूप में शोध करने में अपने दिमाग से सक्रिय रूप से शामिल था।

और भगवान ने इसे ध्यान में रखा। भगवान ने मानव लेखकों के माध्यम से बाइबल लिखी। मैं अभी भी श्रुतलेख सिद्धांत के बारे में बात कर रहा हूँ।

इसका परिणाम यह है कि परमेश्वर ने मानवीय भाषा में अपने शब्द कहे हैं। यह परमेश्वर की कृपा की अभिव्यक्ति है क्योंकि वह मनुष्यों के माध्यम से मनुष्यों के लिए खुद को प्रकट करता है। इस प्रकार बाइबल परमेश्वर द्वारा कोई ऐसी भाषा नहीं बोलती जिसे केवल वह जानता है या जिसे स्वर्गदूत बोलते हैं।

यह मानवीय शब्दों में परमेश्वर का वचन है। नव-रूढ़िवादी दृष्टिकोण परमेश्वर के व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन के महत्व की सही पुष्टि करता है, लेकिन यह कम से कम चार तरीकों से गलत है। सबसे पहले, यह इस बात से इनकार करता है कि व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन शब्दों में होता है और व्यक्तिगत और मौखिक प्रेरणा के बीच एक गलत द्वैधता स्थापित करता है।

शास्त्र, आख्यान, भजन और दृष्टांत अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं हैं। बल्कि, वे लोगों को अपने साथ संगति में लाने के लिए परमेश्वर के साधन हैं। इसलिए, हाँ, नव-रूढ़िवाद रहस्योद्घाटन की वैयक्तिकता पर जोर देता है।

यह अच्छी बात है। यह अच्छी बात है। लेकिन उन्हें मौखिक खुलासे के खिलाफ़ इसे स्थापित करने की ज़रूरत नहीं है।

यह एक व्यक्तिगत मौखिक रहस्योद्घाटन है, और ईश्वर ऐसा करने में सक्षम है। दूसरा, नव-रूढ़िवादी दृष्टिकोण मौखिक सिद्धांत का व्यंग्य करता है। हालाँकि ईश्वर शास्त्र के कुछ हिस्सों को निर्देशित करता है, लेकिन वह अपने पवित्र शब्द को बनाने के लिए ज़्यादातर लेखक के अनुभवों, शब्दावली आदि का उपयोग करता है।

इवेंजेलिकल्स ने लगातार श्रुतलेख सिद्धांत को खारिज कर दिया है, इसके बजाय प्रेरणा के एक जैविक दृष्टिकोण को अपनाया है जिसमें ईश्वर और मानव लेखक भूमिका निभाते हैं - वास्तव में, जब मैं संक्षेप में बताना चाहूँगा, तो इसके बारे में और अधिक बताऊँगा। मैं रचनात्मक नहीं हो रहा हूँ।

धर्मग्रंथों के बारे में एक इंजीलवादी और रूढ़िवादी दृष्टिकोण। इंजीलवादी लगातार श्रुतलेख सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं, इसके बजाय प्रेरणा के एक जैविक दृष्टिकोण को अपनाते हैं

जिसमें ईश्वर और मानव लेखक भूमिका निभाते हैं। जिस तरह से हम नहीं समझते हैं, ईश्वर उनके लेखन को निर्देशित करता है, जैसे कि, उद्धारण, मनुष्य ईश्वर से बोलते थे क्योंकि वे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित थे। 2 पतरस 1:21।

तीसरा, नव-रूढ़िवादी दृष्टिकोण आलोचना के योग्य है क्योंकि ईश्वर स्वयं को कर्म और वचन में प्रकट करता है। इसलिए, जॉर्ज लैड की बाइबिल थियोलॉजी पुस्तक ईश्वर के नियमित रहस्योद्घाटन को कर्म हाइफ़न शब्द रहस्योद्घाटन के रूप में वर्णित करती है।

ईश्वर इतिहास में कार्य करता है, लेकिन वह अपने आपको कर्मों में प्रकट करता है, जैसा कि हमने मूसा के गीत और मिस्र से पलायन के बाद मरियम के गीत में देखा। लेकिन कर्म स्वयं-व्याख्या नहीं करते। प्राचीन निकट पूर्व में लोग जिन्होंने विपत्तियों और पलायन के बारे में सुना था, वे स्वतः ही यह निष्कर्ष नहीं निकालेंगे कि यहोवा ही एकमात्र सच्चा और जीवित ईश्वर है और अपने सभी देवताओं को त्याग देंगे।

यह बेतुका है। नहीं, वे ऐसा तब भी देखेंगे जब उन्होंने इसके बारे में सुना होगा और अपने स्वयं के विश्वदृष्टिकोण के प्रकाश में विश्वास किया होगा, जिसमें उनके अपने देवता भी शामिल हैं। इसके अलावा, सबसे महान कार्य, हमारे प्रभु यीशु का क्रूस पर चढ़ना, उन लोगों द्वारा गलत तरीके से समझा गया था जो क्रूस के पैर पर खड़े थे।

कर्मों की अपनी-अपनी व्याख्या नहीं होती। उन्हें समझने के लिए हमें उनकी व्याख्या करनी पड़ती है। और भगवान दोनों ही काम करते हैं।

वह कार्य करता है, और बोलता है। उसका रहस्योद्घाटन कर्म और वचन का रहस्योद्घाटन है। जॉर्ज लैड बिल्कुल सही हैं।

ईश्वर इतिहास में कार्य करता है, लेकिन कर्म स्वयं व्याख्या नहीं करते। इसलिए, ईश्वर अपने कार्यों की व्याख्या करने के लिए कार्य करता है और बोलता है।

प्रेरणा के नव-रूढ़िवादी दृष्टिकोण की चौथी आलोचना यह है। हालाँकि लोगों को हमेशा आध्यात्मिक रूप से लाभ नहीं मिलता है, और हालाँकि लोगों को हमेशा ईश्वर के वचन से आध्यात्मिक रूप से लाभ नहीं मिलता है, यह सच है कि उन्हें इससे लाभ होता है या नहीं। विश्वास के बिना, उन्हें इससे लाभ नहीं होता है। फिर भी, रहस्योद्घाटन होता है चाहे वे इसे अपनाएँ या नहीं।

हाँ, यदि कोई व्यक्ति उद्धार पाना चाहता है तो व्यक्तिपरक होना महत्वपूर्ण है, और यह पवित्र आत्मा का कार्य भी है। जिस आत्मा ने वचन दिया वह प्राप्तकर्ता में कार्य करता है, वचन के प्रचारकों में और वचन के प्राप्तकर्ताओं में भी कार्य करता है ताकि उन्हें समझने में सक्षम बनाया जा सके। जब लोग वचन सुनते हैं तो वह कई लोगों को प्रकाशित करता है और उन्हें उद्धार करने वाले विश्वास का उपहार भी देता है।

1 कुरिन्थियों 12, आरंभ में, कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा के बिना यीशु को प्रभु नहीं कह सकता। रोमियों 8, पद 15 के आसपास, हमें गोद लेने की आत्मा प्राप्त होती है, जिसके द्वारा हम अब्बा पिता पुकारते हैं। पवित्र आत्मा पापियों को, जो परमेश्वर की संतान नहीं हैं, विश्वास की पुकार के साथ परमेश्वर को पिता कहने और परमेश्वर की संतान बनने में सक्षम बनाता है।

हर कोई जो यह मानता है कि यीशु मसीह है, 1 यूहन्ना 5, 1 परमेश्वर से पैदा हुआ है। आत्मा द्वारा परमेश्वर का पुनर्जन्म कार्य लोगों को प्रभु यीशु में उद्धारपूर्वक विश्वास करने में सक्षम बनाता है। लेकिन फिर भी, चाहे लोग बाइबल पर विश्वास करें या न करें, यह परमेश्वर का प्रकाशन है।

मैं एक ऐसी किताब की ओर इशारा करना चाहता हूँ जिसने बहुत नुकसान पहुँचाया है। लेखक आस्तिक थे, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन जैक रोजर्स और डोनाल्ड मैककिम ने 1999 में *द अथॉरिटी एंड इंटरप्रिटेशन ऑफ़ द बाइबल एंड हिस्टोरिकल अप्रोच नामक किताब लिखी*। उन्होंने उस पूरी किताब में एक झूठे द्वंद्व, व्यक्तिगत और मौखिक रहस्योद्घाटन के बीच एक विच्छेदन को स्थापित किया है।

यह शर्मनाक है। जॉन वुडब्रिज ने एक किताब लिखी, जॉन वुडब्रिज, जिसका शीर्षक है एस्केप्स मी [*बाइबिल अथॉरिटी, इनफैलिबिलिटी एंड इनरेंसी इन द क्रिश्चियन ट्रेडिशन*] उन्होंने उनको एक जवाब लिखा जो बहुत अच्छी तरह से किया गया है।

सीमित अचूकता इस बात से सही रूप से इनकार करती है कि बाइबल इतिहास या विज्ञान का पाठ है। ऐसा नहीं है। हालाँकि, इसके समर्थक यह सिखाते हैं कि बाइबल इतिहास, विज्ञान और अन्य विषयों के मामले में ठोकर खाती है।

परमेश्वर अपने वचन में सत्य बोलता है। इसका उद्देश्य इतिहास और विज्ञान का पाठ पढ़ाना नहीं है। इसका उद्देश्य अपने लोगों को बचाना और पवित्र करना है।

हम मानते हैं कि यह एक धार्मिक पुस्तक है। इन प्रमुख लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लिखते समय, परमेश्वर अन्य मामलों के बारे में भी सच्चाई से बोलता है क्योंकि वह परमेश्वर है, वह सत्य है, और वह सच्चा है। बाइबल शायद आधुनिक वैज्ञानिक सटीकता के साथ न बोल पाए।

शुक्र है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि अगर ऐसा होता तो हममें से कई लोग इसे समझ नहीं पाते। लेकिन यह सच बोलता है। सीमित अचूकता को मानने वाले कुछ लोग अचूकता को नकारते हैं, लेकिन अचूकता को मानते हैं, जैसा कि वे इसे कहते हैं, जिसे वे शास्त्र के रूप में पुनः परिभाषित करते हैं जो परमेश्वर के उद्देश्यों को अचूक रूप से पूरा करता है।

यह अचूकता शब्द का दुरुपयोग करके त्रुटिपूर्णता सिखाता है, शास्त्र की असत्यता सिखाता है। शास्त्र परमेश्वर के अनेक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न साहित्यिक शैलियों का उपयोग करता है, लेकिन यह ऐसा स्वाभाविक रूप से करता है। सत्य की बाइबिल की अवधारणा में न केवल विश्वासयोग्यता शामिल है; इसमें तथ्यात्मकता, तथ्यात्मक सटीकता और पूर्णता भी शामिल है।

इस तरह से तर्क देने वाले लेख के लिए, एक किताब में एक निबंध, रोजर निकोल, द बाइबिलिकल कॉन्सेप्ट ऑफ ट्रुथ, को स्क्रिप्चर एंड ट्रुथ नामक पुस्तक में देखें, जिसे डीए कार्सन और जॉन वुडब्रिज ने संपादित किया है। आह, मुझे रोजर्स और मैककिम पुस्तक की वुडब्रिज आलोचना के लिए मेरा नोट मिल गया। जॉन डी. वुडब्रिज, बाइबिलिकल अथॉरिटी, ए क्रिटिक ऑफ द रोजर्स मैककिम प्रोजेक्ट, ग्रैंड रैपिड्स, ज़ोंडरवन, 1982, जिसका मतलब है कि मैंने किताब में गलत तारीख लिखी है।

यह गलत तारीख है। रोजर्स और मैककिम के अनुसार, मेरा अनुमान है कि यह 1979 है। यह निश्चित रूप से 1999 नहीं है।

अगर वुडब्रिज ने 1982 में जवाब लिखा था, तो मुझे नहीं लगता कि उन्होंने 17 साल बाद आई किसी किताब का जवाब लिखा होगा, जब तक कि उनके पास कुछ ऐसी योग्यताएं न हों जिनके बारे में मैं नहीं जानता। आह, धर्मशास्त्र की किताब में टाइपो। अब समय आ गया है कि कुछ चीजों को एक साथ लाया जाए और प्रेरणा का धर्मशास्त्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाए।

अब समय आ गया है कि हम पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के धर्मशास्त्र को एक साथ लाएँ। हम प्रेरणा के एक जैविक दृष्टिकोण को अपनाते हैं जिसमें ईश्वर और मनुष्य दोनों ही भूमिका निभाते हैं। इस दृष्टिकोण को सहमति कहा गया है, जो पवित्रशास्त्र के सह-लेखकत्व को रेखांकित करता है।

भगवान और लेखक एक साथ काम करते हैं। इसे संगम भी कहा जाता है, जो मेरे गृहनगर सेंट लुइस में सार्थक है, जहाँ मिसौरी और मिसिसिपी नदियाँ एक साथ मिलती हैं। संगम का अर्थ है दो नदियाँ एक साथ मिलकर एक हो जाती हैं।

इस प्रकार पवित्रशास्त्र संगम है। ईश्वरीय और मानवीय पहलू मिलकर ईश्वर के दिव्य मानवीय शब्द का निर्माण करते हैं। इसलिए यह कहना ठीक नहीं होगा कि ईश्वर ने लेखकों को प्रेरित किया, लेकिन शब्दों को नहीं।

2 तीमुथियुस 3:16, सभी पवित्रशास्त्र परमेश्वर से प्रेरित हैं, या संभवतः प्रत्येक पवित्रशास्त्र अंश परमेश्वर से प्रेरित है। परमेश्वर ही पवित्रशास्त्र का अंतिम लेखक है। यह हमारी शुरुआती जगह है।

परमेश्वर सीधे तौर पर हस्तलिखित हस्तलेखों, पवित्रशास्त्र की मूल पांडुलिपियों को प्रेरित करता है। हस्तलिखित हस्तलेख वास्तव में बाइबल की पुस्तकों का मूल पाठ हैं, न कि प्रतिलिपियाँ। अपने विधान में, परमेश्वर सदियों से पवित्रशास्त्र को सुरक्षित रखता है ताकि आज हमारे पास जो बाइबल है वह विश्वसनीय प्रतिलिपियाँ हों।

परमेश्वर अपने वचन को लिखने के लिए मानवीय लेखकों का उपयोग करता है। मनुष्य पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे, 2 पतरस 1:21। आत्मा लेखकों का मार्गदर्शन करता है ताकि वे उसके वचन बोलें। शास्त्र मानवीय है।

यह एक मानवीय पुस्तक है। हम इसे अस्वीकार नहीं करते। मैं इसे अनुग्रह के सिद्धांत का एक उपसमूह मानता हूँ क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों से संवाद करना चाहता था।

इसलिए, उन्होंने अपने पुराने नियम के लोगों की भाषा, हिब्रू का इस्तेमाल किया। मुझे पता है कि इसमें कुछ अरामी भाग भी थे, लेकिन जो मुख्य रूप से हिब्रू था, वह इसलिए क्योंकि वह उनके लोगों की भाषा थी। और उन्होंने नए नियम को लिखने में आम घर, छोटे लड़कों के होमवर्क, पत्नियों की लॉन्डी लिस्ट, ग्रीक का इस्तेमाल किया।

दरअसल, विश्वास करने वाले विद्वानों के पास कुछ समय के लिए पवित्र आत्मा ग्रीक का सिद्धांत था क्योंकि नया नियम प्राचीन एथेंस के ग्रीक से अलग था, मान लीजिए, 500 ईसा पूर्व, और यह आज एथेंस की सड़कों पर बोली जाने वाली भाषा से अलग है। उन्होंने सोचा कि यह पवित्र आत्मा ग्रीक है। यह भगवान द्वारा दी गई एक विशेष भाषा है।

यह बेवकूफी नहीं है, लेकिन यह गलत है क्योंकि ग्रीक पांडुलिपियों, ग्रीक लेखन की खोज, यह पांडुलिपियों, कपड़े धोने की सूचियों, होमवर्क सूचियों और सभी प्रकार के सामान्य लेखन के रूप में इतनी उच्च शक्ति भी नहीं है, जो कि न्यू टेस्टामेंट के समान ही कोइन या सामान्य ग्रीक में थी। इसलिए, यह पता चलता है कि जैसे ही सिकंदर महान ने दुनिया को जीतने की कोशिश की, उसने ग्रीक प्रभाव फैलाया। यह हेगेलीकरण की एक प्रक्रिया थी।

उन्होंने हर जगह यूनानी भाषा का प्रचार किया। इसलिए, पतरस और फिर पौलुस, खासकर जब वह प्रेरितों के काम की पुस्तक में गैर-यहूदी शहरों में गया, तो वह शायद लाइकोनी भाषा नहीं जानता था जैसा कि हमने प्रेरितों के काम अध्याय 14 में देखा, लेकिन उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी क्योंकि वह और वे, लाइकोनी, लुस्त्रा के लोग, आम या कोइन यूनानी बोलते थे। इसलिए शास्त्र की मानवता परमेश्वर की इच्छा को व्यक्त करती है और संकेत देती है कि परमेश्वर दुनिया के साथ संवाद करना चाहता है, न केवल यहूदियों के साथ, बल्कि उस नए नियम की दुनिया में सभी के साथ।

शास्त्र की मानवीयता शास्त्र की दिव्यता के बिना बेकार होगी, जैसे कि बाइबल मानवीय शब्दों में परमेश्वर के वचनों के बिना। बाइबल की मानवीयता स्पष्ट है। लेखकों के पास अलग-अलग शब्दावली, शैली और जोर है।

वे लूका 1:1 से 4 का अध्ययन करते हैं और अपने अनुभवों के बारे में लिखते हैं। सबसे पहले, यूहन्ना 1:1 से 3, यूहन्ना कहता है, हम, मुझे लगता है कि इसका मतलब प्रेरितों से है, हमने देखा, हमने सुना, हमारे हाथों ने जीवन के वचन, प्रभु यीशु मसीह को छुआ। दूसरा कुरिन्थियों 11:21 से 33, पौलुस अपने कष्टों, अपने दण्डों और अपनी पीड़ा के बारे में बात करता है।

यह एक अद्भुत सूची है। जहाज़ टूट गया, छड़ों से पीटा गया, प्रताड़ित किया गया, हे भगवान, यह एक आश्चर्य है, ठीक है, उसे कुलुस्से के बाहर मरने के लिए छोड़ दिया गया था, लेकिन भगवान ने उसे बचा लिया ताकि वह लिखना जारी रख सके। मुद्दा यह है कि शास्त्र लेखकों ने न केवल अध्ययन किया, बल्कि उन्होंने अपने अनुभवों से लिखा।

ईश्वर कृपापूर्वक मनुष्यों से संवाद करने के लिए मनुष्यों का उपयोग करता है, लेकिन उसने अपना वचन मनुष्यों के माध्यम से मनुष्यों तक पहुँचाया। हम इस विचार को अस्वीकार करते हैं कि लेखकों ने अपने विचार ईश्वर से अलग अपने मन से प्राप्त किए। ईश्वर उनके मन का उपयोग करता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन वे कभी भी केवल स्वयं से जानकारी प्राप्त नहीं करते हैं क्योंकि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी भविष्यवक्ता की अपनी व्याख्या से नहीं आती है।

2 पतरस 1:20. इसी तरह, हम पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर ने शास्त्र देने में दैवीय रूप से मार्गदर्शन किया। उसने मूसा की शिक्षा और पृष्ठभूमि का उपयोग करते हुए पंचग्रन्थ लिखा।

वह अपने पत्र लिखते समय पौलुस के रब्बी प्रशिक्षण का उपयोग करता है, लेकिन हम पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर लेखकों को तैयार करने में अपने प्रावधान का प्रयोग करने से कहीं अधिक करता है। वह न केवल मार्गदर्शन करता है, बल्कि बोलता भी है। जब लेखक लिखते हैं तो वह एक विशेष तरीके से कार्य करता है।

ईश्वर यह कैसे करता है, इसे पूरी तरह से समझने में हमारी असमर्थता आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि ईश्वर-मानवीय संपर्क अक्सर हमारी समझ से परे होता है। हम मानते हैं कि मसीह ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं, हालाँकि हम अवतार को पूरी तरह से नहीं समझा सकते। यह एक अच्छा समानांतर है।

हम ईश्वर के पुत्र के अवतार में विश्वास करते हैं। पवित्र आत्मा ने ऐसा किया। उसने मरियम को गर्भधारण कराया।

वह तुम पर छाया करेगा, और जो हम तुममें जन्म लेंगे वह परमेश्वर का पवित्र पुत्र है। लूका 1, मत्ती 1, दो बार। यह गर्भाधान परमेश्वर की ओर से होगा।

यह हमें बताता है कि भगवान ने ऐसा किया। यह हमें यह नहीं बताता कि उसने किस तरह से, किस तरीके से, किस तरह से यह किया। बाइबल की प्रेरणा में भी यही बात है।

प्रभु की चिंता यह है कि हम अंतिम उत्पाद को मानवीय शब्दों में ईश्वर के वचन के रूप में देखें, न कि यह कि हम उन सभी साधनों को समझें जिनका उपयोग ईश्वर ने किया। शायद उसने विभिन्न साधनों का उपयोग किया। हमें वास्तव में नहीं बताया गया है।

हम मानते हैं कि मसीह ईश्वर और मनुष्य है, हालाँकि हम उसके अवतार को पूरी तरह से नहीं समझा सकते। इसी तरह, हम मानते हैं कि बाइबल ईश्वर का वचन है, बिना प्रेरणा के तरीके को पूरी तरह समझे। हम जानते हैं कि ईश्वर हमें अपना वचन देने के लिए लोगों के माध्यम से काम करता है।

इसका परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर का वचन लिखा गया, पवित्र शास्त्र। दूसरा तीमुथियुस 3:15, पवित्र शास्त्र। बचपन से ही, पौलुस लिखता है कि आप पवित्र लेखन, पवित्र शास्त्र और पवित्र शास्त्रों को जानते हैं, जो आपको यीशु में विश्वास के माध्यम से उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं।

भगवान हमें ऐसा करने के लिए कैसे इस्तेमाल करते हैं, हमें पवित्र शास्त्र देते हैं, यह एक रहस्य बना हुआ है। जैविक प्रेरणा एक दिव्य-मानव के साथ मिलकर काम करने, एक सहमति, एक संगम, दो नदियों के एक साथ आने की पुष्टि करती है। यह शास्त्र की भाषा और संदेश के अनुरूप है, जो हमें प्रेरणा के परिणामों के बारे में बताता है, लेकिन भगवान द्वारा इस्तेमाल किए गए साधनों के बारे में बहुत कम बताता है।

मैं इस पर विस्तार से बात करता हूँ क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है कि हम यह न सोचें कि हम जितना जानते हैं उससे ज़्यादा जानते हैं। हमारे लिए अपनी सीमाओं को समझना और ईश्वर की चुप्पी का सम्मान करना अच्छा है। हम द्वितीय तीमुथियुस 3:16 के आधार पर शास्त्र की पूर्ण, पूर्ण और मौखिक, शब्द-रूपी प्रेरणा की पुष्टि करते हैं।

सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा प्रेरित हैं। पूर्ण का अर्थ है कि न केवल धर्मग्रंथ के भाग, बल्कि पूरा धर्मग्रंथ भी ईश्वर का वचन है। मौखिक का अर्थ है कि न केवल विचार, जैसा कि कुछ कमजोर अंतर्ज्ञान और रोशनी सिद्धांतों में, और यहां तक कि गतिशील सिद्धांत में भी है, बल्कि विचार और शब्द भी ईश्वर के शब्द हैं।

आप कहते हैं, लेकिन वे भी मानवीय शब्द हैं। हम पहले ही इस पर चर्चा कर चुके हैं। हम इसकी व्याख्या नहीं कर सकते, लेकिन वे मानवीय शब्दों में ईश्वर के शब्द हैं।

प्रेरणा लेखकों और उनके लेखन, प्रक्रिया और शास्त्र के उत्पाद, मुख्य रूप से उत्तरार्द्ध से संबंधित है। यीशु और उनके प्रेरित मौखिक प्रेरणा की पुष्टि करते हैं। यीशु ने कहा, जब तक स्वर्ग और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक भी अक्षर या अक्षर का एक भी बिंदु तब तक नहीं टलेगा जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए।

मत्ती 5:18. मत्ती 22:32 में उनका मुद्दा निर्गमन 3:6 में क्रिया के काल पर आधारित है। मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ। पॉल कहते हैं कि उनके पास जीवितों का परमेश्वर है, मृतकों का नहीं। यीशु कहते हैं।

इसी तरह, गलातियों 3:16 में पौलुस की बात उत्पत्ति 12:7 में एकवचन संज्ञा पर आधारित है। और पौलुस कहता है, उसने बीज कहा न कि बीज। बीज का मतलब मसीह है न कि परमेश्वर के लोगों से संबंधित बीज। वास्तव में, पौलुस गलातियों 3 में इस विचार का दोनों तरह से उपयोग करता है। बाद में, वह इसे बहुवचन सामूहिक अर्थ में उपयोग करता है, लेकिन जब वह कहता है कि यीशु वंश है, अब्राहम का वंशज है, तो वह अपना मामला बनाने के लिए बहुवचन संज्ञा के बजाय एक संज्ञा का उपयोग कर रहा है।

इसके अलावा, परमेश्वर पवित्रशास्त्र के वचनों को उन विचारों को व्यक्त करने के लिए निर्देशित करता है जो वह चाहता है। शब्द विचारों को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार, हम विचारों के अलावा शब्दों की प्रेरणा के बारे में बात नहीं कर सकते हैं, और हम शब्दों के अलावा परमेश्वर द्वारा विचार दिए जाने के बारे में बात नहीं कर सकते हैं।

शब्दों का पूरा उद्देश्य विचार देना है। इसलिए उन्होंने शब्दों के अलावा विचार नहीं दिए। यह वास्तव में असंभव है।

उन्होंने हमें शब्द इसलिए नहीं दिए कि हम शब्दों पर ध्यान दें और अपने विचारों को नज़रअंदाज़ कर दें। नहीं, उन्होंने शब्द इसलिए दिए ताकि हम विचारों को, प्रेरणा के परिणामों को समझ सकें। हम उससे बहुत आगे निकल चुके हैं।

अतीत? उफ़। माफ़ करें - प्रेरणा का परिणाम।

क्या आप पिछली स्लाइड पर वापस जाएंगे? क्षमा करें। यह क्या कहती है? ठीक है। हाँ, यह अगली पूरी स्लाइड है।

मुझे खेद है। प्रेरणा के परिणाम। मुझे एक सिंहावलोकन देने दें।

महत्वपूर्ण परिणाम इस तथ्य से मिलते हैं कि परमेश्वर ही बाइबल का अंतिम लेखक है। ऐसा होने के कारण, शास्त्र परमेश्वर का वचन है। सबसे पहली बात, यह प्रामाणिक है।

दूसरा, यह त्रुटिहीन है, सही तरीके से समझा जा सकता है, पर्याप्त है, स्पष्ट है और लाभदायक है। हम अगले कुछ व्याख्यानों में एक के बाद एक इन महत्वपूर्ण विचारों पर चर्चा करेंगे। शास्त्र परमेश्वर का वचन है।

यह प्रामाणिक, त्रुटिहीन, पर्याप्त, स्पष्ट और लाभकारी है। शास्त्र परमेश्वर का वचन है। हमने पहले कार्ल एफएच हेनरी का उल्लेख किया था, जो एक जबरदस्त नेता थे।

खैर, आप उनके इस छोटे से वर्णन में देखेंगे। मैं हेनरी का एक उद्धरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। हेनरी, 1913 से 2003 तक, एक अमेरिकी इंजील बैपटिस्ट धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने 20वीं सदी के मध्य से लेकर अंत तक इंजीलवाद का नेतृत्व करने में मदद की।

उन्होंने इंजीलवादियों के बीच अकादमिक संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी बनाने में मदद की। वे ईसाई धर्म के लिए एक विद्वान आवाज़ और उदार ईसाई सदी के लिए एक चुनौती के रूप में क्रिश्चियनिटी टुडे के संस्थापक संपादक थे। 1978 में, उन्होंने बाइबिल की अचूकता पर शिकागो वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए।

उन्होंने अपना सबसे प्रसिद्ध कार्य, छह खंडों वाला *ईश्वर, रहस्योद्घाटन और अधिकार*, 1983 में पूरा किया। कार्ल हेनरी को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि प्रेरणा के परिणामस्वरूप, पवित्रशास्त्र ईश्वर का वचन है। उद्धरण, ईश्वर का रहस्योद्घाटन तर्कसंगत संचार है जिसे समझदार विचारों और सार्थक शब्दों में व्यक्त किया जाता है।

अर्थात्, वैचारिक मौखिक रूप में। सभी दिव्य रहस्योद्घाटन में मध्यस्थ एजेंट शाश्वत लोगो, यीशु, पूर्व-अस्तित्व में, अवतार, और अब महिमामंडित है। ईश्वर का रहस्योद्घाटन अद्वितीय रूप से व्यक्तिगत है, सामग्री और रूप दोनों में।

परमेश्वर न केवल ब्रह्मांड और राष्ट्रों के इतिहास में सार्वभौमिक रूप से खुद को प्रकट करता है, बल्कि बाहरी इतिहास में भी अद्वितीय उद्धार कार्यों में मुक्ति के रूप में प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, निर्गमन, चर्च, आदि। परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का चरमोत्कर्ष नासरत के यीशु, देह में परमेश्वर का व्यक्तिगत अवतार है।

यीशु मसीह में, रहस्योद्घाटन का स्रोत और विषयवस्तु एक साथ मिलते हैं और मेल खाते हैं। नासरत का यीशु केवल एक आंतरिक दिव्य अधिकार का वाहक नहीं है। वह स्वयं देह में शब्द है।

हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि पवित्रशास्त्र चार कारणों से परमेश्वर का वचन है। सबसे पहले, इसे नियमित रूप से परमेश्वर के वचन के साथ बुलाया और बराबर किया जाता है। यह पवित्र लेखन है, 2 तीमुथियुस 3.15। यह परमेश्वर द्वारा साँस दी गई है, श्लोक 16।

यह वचन है, 2 तीमुथियुस 4:2। यह सत्य है, 2 तीमुथियुस 4.4। यह कहते हुए पौलुस कोई नई बात नहीं कहता, बल्कि तीमुथियुस को याद दिलाता है कि वह पुराने नियम से पहले से क्या जानता है। वास्तव में, भजन 19, 7-11 जैसे पाठ इस बात पर जोर देते हैं कि पवित्रशास्त्र प्रभु का वचन है, जिसका दोहराव अच्छे प्रभाव के लिए किया गया है। हमने सामान्य प्रकाशन का अध्ययन करते समय पहले भजन 19, 1-6 पढ़ा था।

अब, भजन 19:7-11, पवित्र शास्त्र में विशेष प्रकाशन का अध्ययन करें। यह आश्चर्यजनक है कि भजनकार और दाऊद ने दोनों को एक साथ जोड़ दिया। भजन 19:7, प्रभु का नियम सिद्ध है।

इसमें कोई कमी नहीं है। आत्मा को पुनर्जीवित करना भी नैतिक रूप से सही है, और शायद यही यहाँ मुख्य विचार हो सकता है। यह आत्मा को पुनर्जीवित करता है।

यह हमें आध्यात्मिक रूप से तरोताज़ा करता है। यह परमेश्वर के लोगों को तरोताज़ा करता है। इसने उन्हें अतीत में, पुराने नियम में तरोताज़ा किया था।

यह आज परमेश्वर के लोगों को तरोताज़ा करता है। यहाँ पवित्र शास्त्र के लिए दूसरा शब्द, प्रभु की गवाही पक्की है। यह विश्वसनीय है, सरल लोगों को बुद्धिमान बनाती है।

बाइबल के ज्ञान साहित्य में सरल का अर्थ है वे लोग जो आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, युवा और अन्य लोग जो आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। ओह, क्योंकि परमेश्वर का वचन विश्वसनीय है, यह सरल लोगों को भी बुद्धिमान बनाता है।

प्रभु के उपदेश, पवित्रशास्त्र का दूसरा पर्याय, सही हैं, हृदय को आनन्दित करते हैं। प्रभु की आज्ञा शुद्ध है, आँखों को आलोकित करती है। परमेश्वर का वचन नैतिक रूप से शुद्ध है।

शास्त्र पवित्र लेखन हैं। जैसा कि यहूदियों ने कहा, उल्लेखनीय रूप से, उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुरक्षित रखा, जिसने उन्हें नियमित रूप से कानून, भविष्यद्वक्ताओं और लेखन में न्याय और निंदा की। अविश्वसनीय रूप से।

क्यों? क्योंकि वे जानते थे कि यह परमेश्वर का पवित्र वचन है। उन्होंने इसे पुराने नियम की पुस्तकें कहा, ये पुस्तकें हाथों को अशुद्ध करने वाली पुस्तकें हैं। प्रभु की आज्ञा पवित्र है, आँखों को प्रकाश देने वाली है।

प्रभु का भय या तो पवित्रशास्त्र का पर्याय है या फिर पवित्रशास्त्र का परिणाम है। प्रभु का भय शुद्ध है। फिर से, नैतिक गुण हमेशा सामने आता रहता है, हमेशा के लिए बना रहता है।

से भी अधिक मनभावन हैं, बल्कि बहुत अधिक उत्तम सोने से भी अधिक, शहद और मधु के छत्ते से भी अधिक मीठे हैं।

लेखक, डेविड, परमेश्वर के वचन की वांछनीयता को दर्शाता है। यह पैसे और संपत्ति से भी ज़्यादा वांछनीय है। यह आपके पसंदीदा भोजन से भी ज़्यादा मीठा है।

प्राचीन लोग शहद के कारण मिठास जानते थे, बेशक। इसके अलावा, वे आपके सेवक को चेतावनी देते हैं। यह शास्त्र की उपयोगिता के बारे में बताता है।

2 तीमुथियुस 3:16, सभी शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए हैं और शिक्षा, डांट, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक हैं। डांट हमें बताती है कि हम कहाँ गलत हैं, और सुधार हमें दिखाता है कि इसे कैसे सही किया जाए। भजन 19, पद 11 में पहले से ही परमेश्वर के वचनों के द्वारा, आपके सेवक को चेतावनी दी जाती है, और उन्हें मानने से बड़ा प्रतिफल मिलता है।

यह पाठ जो हमने अभी पढ़ा है, दिखाता है कि परमेश्वर का वचन उसका वचन है। वह अपने लोगों के जीवन में अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इसका उपयोग करता है, उन्हें शुद्ध करता है, उनका मार्गदर्शन करता है, उन्हें चेतावनी देता है, और उन्हें प्रोत्साहित करता है। और परमेश्वर भला है और वह हमें अपना भला वचन देता है।

दूसरा, जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर लेखकों को निर्देश देता है ताकि पवित्रशास्त्र उससे प्रेरित हो। 2 पतरस 1:20 और 21, 2 तीमुथियुस 3:16। यह गतिशील और मौखिक प्रेरणा है।

पवित्र आत्मा का पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखकों पर अलौकिक कार्य ताकि वे वही लिखें जो परमेश्वर ने अपने सत्य को संप्रेषित करने के लिए इरादा किया था। यह परिभाषा मानव लेखकों में अपनी आत्मा के द्वारा परमेश्वर की क्रिया और परिणामी पाठ की प्रकृति दोनों के बारे में बताती है। तीसरा, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की विशेषताओं को धारण करता है और उसके लिए प्रमुख कार्य करता है।

भजन 19 में, जैसा कि ऊपर उद्धृत किया गया है, हमारे पास यह पैटर्न है। फिर प्रभु की व्यवस्था, जो पवित्रशास्त्र का पर्याय है, का वर्णन किया गया है। और फिर वह कहता है, लेखक कहता है, दाऊद कहता है, यह क्या पूरा करता है।

पवित्रशास्त्र, जो इसका पर्यायवाची है, ने इसकी उपयोगिता, इसके उद्देश्य, कानून, गवाही, उपदेश, आज्ञाएँ और नियमों का वर्णन किया है। ये परमेश्वर के पवित्र वचन को संदर्भित करने के विभिन्न तरीके हैं। यह संपूर्ण रूप से परिपूर्ण, सुनिश्चित, सही, शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, सत्य और धर्मी है।

यह आत्मा को पुनर्जीवित करता है, सरल लोगों को बुद्धिमान बनाता है, हृदय को आनन्दित करता है, आँखों को आलोकित करता है, और हमेशा के लिए बना रहता है। यह एक सुंदर नमूना है जो हमें परमेश्वर के पवित्र वचन की उपयोगिता के बारे में सिखाता है। क्योंकि परमेश्वर के वचन में ये चिह्न हैं, भजन 19 के वर्णनकर्ता, यह परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में प्रभावी है।

यह जीवन को नवीनीकृत करता है, बुद्धि लाता है, आनन्द को बढ़ाता है, सत्य सिखाता है, चेतावनी देता है, तथा आशीर्वाद की ओर ले जाता है। चौथा, यीशु और प्रेरितों ने पुराने नियम के कई कथनों को परमेश्वर के लिए जिम्मेदार ठहराया है, जो मूल रूप से परमेश्वर के लिए नहीं थे। हम इसे अपने अगले व्याख्यान में उठाएंगे और प्रेरणा के अन्य परिणामों के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, विशेष प्रकाशितवाक्य, पवित्र शास्त्र, प्रेरणा के सात दृष्टिकोणों का मूल्यांकन, प्रेरणा का धर्मशास्त्र, प्रेरणा के परिणाम।